पाठ–3

मच्छड़बाबू

पात्र		
मच्छड़ बाबू	:	मच्छर
बालक	:	विद्यार्थी

(एक बालक बैठा है। दूसरा मच्छड़ का वेश बनाए आता है)

मच्छड़ : भन् भन् भन् भन् भन् भन्
राग सुरीले गाते हैं हम।
चूस–चूस कर खून खुशी से,
चुपके से उड़ जाते हैं हम।

बालक : आप कौन हैं? आपका राग तो बड़ा सुरीला है।

मच्छड़ : मेरा राग सुरीला है। क्यों न होगा मेरा राग सुरीला? क्या तुम जानते नहीं कि मैं हर रोज कितना खून पीता हूँ।

बालक : क्या कहा! आप हर रोज खून पीते हैं, क्या इसीलिए आपका राग सुरीला है?

मच्छड़ : हाँ ! मुझे ऐसा लगता है कि तुम मुझे पहचानते नहीं हो।

बालक : हाँ भाई, आज तक तो मुझे तुमसे मिलने का सौभाग्य नहीं मिला।

मच्छड़ : मुझे लोग मच्छड़बाबू कहकर पुकारते हैं। मैं नालियों और पानी के गड्ढ़ों में पैदा होता हूँ। इसीलिए मुझे आप नालीप्रसाद या गड्ढ़ाचंद भी कह सकते हैं।

बालक : ओ हो! तो आप श्री नालीप्रसादजी,गड्ढ़ाचंदजी या मच्छड़बाबूजी हैं। बड़ी कृपा की आपने जो इस दास को दर्शन दिए।

मच्छड़ : (हँसते हुए) हैं हैं हैं ..... अजी इसमें कृपा की कौन–सी बात है? कृपा करना तो मेरा धंधा ही है। मैं तो ऐसी कृपा रोज बहुतों पर करता हूँ।

बालक : ओ हो ! तब तो आप बड़े परोपकारी हैं।

मच्छड़ : (हँसते हुए) हैं हैं हैं .....परोपकारी! हाँ मैं सचमुच बड़ा परोपकारी हूँ। मैं सफाई का पाठ पढ़ाता हूँ। जो लोग घर साफ़ नहीं रखते हैं, या जिनके घर के आस–पास कीचड़ भरे गड्ढे या रुके हुए पानी की नालियाँ होती हैं, उन्हें मैं सजा देता हूँ।

बालक : क्यों महाशय, आप साफ न रहने की क्या सजा देते हैं ?

मच्छड़ : मैं कभी उनके कान या नाक में और यदि मुँह खुला मिला तो उसमें भी घुस जाता हूँ। इससे भी वे नहीं चेतते तो मैं उन्हें काटता हूँ।

बालक : वाह! वाह! निश्चय ही आप संसार का बड़ा उपकार कर रहे हैं। मच्छड़बाबू, आपको बार–बार प्रणाम है।

मच्छड़ : प्रणाम! अरे, तुम तो क्या बड़े–बड़े तक मुझे प्रणाम करते हैं। अपने बल से मैं बड़े–बड़े पहलवानों को पछाड़ देता हूँ। वह दाँव लगाता हूँ कि वे कई दिनों तक चित पड़े रहते हैं।

बालक : बड़े आश्चर्य की बात है। आप हैं तो इतने जरा–से और पहलवानों को पछाड़ देते हैं। वह कौन–सा दाँव है आपका ?

मच्छड़ : मैं उन्हें काटकर उनके खून में रोग के कीटाणु छोड़ देता हूँ। कुछ दिनों बाद उन्हें जोर से ठंड लगती है और तेज बुखार आ जाता है। इस बुखार का नाम जानना चाहते हो?

बालक : हाँ, हाँ।

मच्छड़ : इस बुखार का नाम है– मलेरिया या जूड़ीताप।

बालक : आपकी बात सुनकर तो मुझे भी ठंड लगने लगी है। मालूम होता है मानो बुखार बढ़ रहा है।

मच्छड़ : डरो मत, बैठो। देखो, मैं तुम्हे अपने दाँव से बचने का उपाय भी बताता हूँ।

बालक : (डर से काँपता हुआ) जरूर बताइए, जरूर बताइए। महाराज मच्छड़बाबू, नालीप्रसादजी, गड्ढ़ाचंदजी, जरूर बताइए।

मच्छड़ : सुनो, मलेरिया या जूड़ीताप होने पर कुनैन और उससे मिलती–जुलती दवाइयाँ खानी चाहिए। पेट साफ रखना चाहिए।

बालक : अच्छा–अच्छा! मैं जूड़ीताप से छुटकारा पाने के लिए कुनैन और उससे मिलती–जुलती दवाइयाँ भी खाऊँगा। पेट भी साफ़ रखूँगा (पेट और पीठ पर हाथ रखता है) साथ ही साथ, आपसे बचने का उपाय भी बता दीजिए।

मच्छड़ : (हँसता है) तुम बहुत चालाक हो। अच्छा बताता हूँ। मुझसे बचने का उपाय है– घर में स्वच्छता रखना। घर के आस–पास जो नाली और गड्ढे हों, उनमें डी.डी.टी. डालना या कोई ऐसी दवाई छिड़कना, जिससे कीटाणु मर जाते हैं।

बालक : मैं आज ही से अपने घर में बड़ी सफाई रखूँगा। घर के आस–पास नाली और गड्ढ़ों में कीटाणु मारने की दवाई छिड़का करूँगा। पर मैं एक बात पूछना चाहता हूँ।

मच्छड़ : क्या?

बालक : मच्छरदानी से आपका क्या संबंध है?

मच्छड़ : ओफ–ओ। मच्छरदानी मेरी शत्रु है, समझे। उसे लगाकर जो लोग सोते हैं उनका खून मैं नहीं पी सकता। उन्हें मैं पछाड़ नहीं सकता। तुमने मच्छरदानी का नाम लेकर मुझे गुस्सा दिलाया है... हाँ।

बालक : (कान पकड़कर और गालों पर मारते हुए) भूल हुई। (जाते–जाते) अब मैं चलता हूँ। मुझे आपसे डर लगता है लेकिन मच्छड़बाबू! आज से मैं मच्छरदानी लगा कर सोऊँगा।

मच्छड़ : (गुस्से से धमकाता हुआ) भाग जा....नहीं तो...।

(लड़का चिढ़ाता हुआ भाग जाता है)

(पर्दा गिरता है)

बलदेव प्रसाद

शब्दार्थ

सुरीला – मीठे स्वर वाला
दर्शन – देखना, दिखाई देना,
सौभाग्य – अच्छा भाग्य
कीटाणु – रोग पैदा करने वाले छोटे–छोटे जीव
जूड़ीताप – ठंड लगकर कँपकपी के साथ आने वाला बुखार

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

कृपा, श्रीयुत् ,दर्शन, प्रणाम, आश्चर्य।

सोचें और बताएँ

1. 'मेरा राग सुरीला है' किसने, किससे कहा?
2. मच्छड़बाबू के काटने से कौन–सा बुखार हो जाता है?
3. मच्छड़बाबू का राग सुरीला क्यों है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. मलेरिया होने का कारण है –
   (क) कुत्ते का काटना (ख) मधुमक्खी का काटना
   (ग) मच्छर का काटना (घ) ततैया का काटना
2. मलेरिया बुखार को किस दूसरे नाम से जाना जाता है –
   (क) हैजा (ख) जूड़ीताप
   (स) डेंगू (ग) प्लैग

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मच्छड़बाबू कहाँ पैदा होते हैं?
2. "ओ हो! तब तो आप बड़े परोपकारी हैं।" यह वाक्य किसने कहा?
3. मलेरिया होने पर कौन–सी दवाई खाने की बात कही गई है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मच्छड़बाबू किस बात का पाठ पढ़ाते हैं और क्यों?
2. मच्छड़बाबू किसे सज़ा देते हैं और कैसे?
3. मलेरिया बुखार के क्या लक्षण होते हैं?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मच्छरों से फैलने वाले रोग कौन–कौनसे हैं?
2. मच्छरों से बचने के उपायों के बारे में विस्तार से लिखिए ?

भाषा की बात

1. सुर शब्द में 'ईला' जुड़ने पर सुरीला शब्द बनता है। आप भी निम्नलिखित शब्दों में 'ईला' जोड़कर देखो कि नए शब्द क्या बनते हैं–

   जहर, हठ, नशा, रंग, चमक

   जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर दे या नया शब्द बना दे, उसे प्रत्यय कहते हैं।

   निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर तीन–तीन शब्द बनाओ–

   ता, ई, ईय

1. आपने कक्षा पाँच में 'र' के विभिन्न रूपों के बारे में पढ़ा था; जैसे – प्रश्न, राम, धर्म, राष्ट्र।
   हिंदी भाषा में 'र' निम्न रूपों में लिखा जाता है –
   'र' व्यंजन के रूप में (स्वर सहित) अपने मूल रूप में आता है।
   'र्' व्यंजन के पहले आता है तो जहाँ उच्चरित होता है उसके आगे वाले वर्ण के ऊपर ' र्‍ ' आता है; जैसे–कर्म, वर्ण।

यदि हलंत व्यंजन के बाद 'र' आता है तो ' ↗ ' रूप में लिखा जाता है; जैसे– प्रकाश, भ्रम।

'र' यदि ट्,ठ्,ड्,ढ् के बाद प्रयुक्त होता है तो उसके हलंत के साथ जुड़कर ट्र, ड्र आदि रूप में लिखा जाता है, जैसे – ट्रक, राष्ट्र, ड्रम आदि।

आप भी 'र' के रूप वाले तीन–तीन शब्द लिखिए।

पाठ से आगे

1. आपके घरों में मच्छरों से बचने के लिए और क्या–क्या उपाय करते हैं? लिखिए।
2. गन्दगी से मच्छर अधिक पैदा होते हैं। गंदगी से अन्य कौन–कौन सी बीमारियाँ होती हैं? जानकारी करके लिखिए।

यह भी करें

1. मलेरिया एक विशेष मच्छर के काटने से होता है। उस मच्छर का नाम पता कीजिए।
2. मलेरिया व डेंगू जैसी बीमारियों के लिए परम्परागत इलाज के बारे में पता कीजिए।
3. भारत सरकार व राज्य सरकार द्वारा 'स्वच्छता अभियान' चलाया गया है, उसके बारे में अपने शिक्षकों से जानकारी प्राप्त कीजिए।

यह भी जानें

- खुले में शौच न करें, शौचालय में ही शौच करें।
- शौच के बाद हाथों को अच्छी तरह साबुन से धोएँ।
- भोजन से पूर्व हाथों को साबुन से धोएँ।
- अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखें एवं शुद्ध जल पीएँ।
- कूड़े–कचरे का निष्पादन कचरा गड्ढों में करें।
- बेकार पानी की निकासी सोख्ता गड्ढे में करें।

तब और अब

पुराना रूप	धन्धा	ठण्ड	सम्बन्ध
मानक रूप	धंधा	ठंड	संबंध

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

A bad work man blames his tools.

एक खराब कारीगर अपने औज़ारों को दोष देता है।

केवल पढ़ने के लिए

पढ़ो! हँसो!

1. दिनेश– शर्ट सिलवाने के लिए अच्छा कपड़ा दिखाओ।
सेल्समेन– प्लेन में दिखाऊँ।
दिनेश– नहीं, अभी तो ज़मीन पर ही दिखाओ।

———— o ———— o ————

2. भिखारी– 'ऐ भाई, एक रुपया दे दो, तीन दिन से भूखा हूँ।'
कनिष्क– तीन दिन से भूखे हो तो एक रुपये का क्या करोगे ?
भिखारी– वज़न तोलूगाँ, कितना घटा है ?

———— o ———— o ————

3. पत्रकार ग्रामीण से– सुना है आपके गाँव में किसी बड़े आदमी ने जन्म लिया था ?

ग्रामीण– नहीं साहब, हमारे गाँव में तो अब तक सिर्फ बच्चों ने ही जन्म लिया है।

———— o ———— o ————

4. पत्नी पति से – तुम रोज सुबह मेरे चेहरे पर पानी क्यों डालते हो?
पति – तुम्हारे पिता ने कहा था मेरी बेटी फूल की तरह है, इसे मुरझाने मत देना, इसलिए .....
5. सुरेश साधु से – स्वामी जी, मेरी पत्नी बहुत परेशान करती है। कोई उपाय बताइए?
साधु – बेटा, उपाय होता तो मैं साधु क्यों बनता?
6. राजू– माँ कहती हैं भैंस का दूध पीने से दिमाग तेज होता है।
तुन्नु– माँ बेवकूफ बनाती है। अगर ऐसा होता तो भैंस का बच्चा वैज्ञानिक नहीं बन जाता?
(आप भी ऐसे चुटकुले संकलित करें और अपने साथियों को सुनाएँ।)